» पेज -2
इतना संपन्न था कि कभी
स्वर्णकच्छ कहलाता था सोनकच्छ

जब एसआरके कल के
संगीतकार से » पेज -7

राष्ट्रीय साप्ताहिक
पायोनियर प्राइड
www.rashtriyapioneerpride.com
• वर्ष-1 • अंक- 22 • मूल्य- 2 रुपए • पृष्ठ-8 | 04/01/2018 | इंदौर | गुरुवार

इंटेल प्रोसेसर में मिली 3 बड़ी खामियां

न्यूयार्क। इंटेल प्रोसेसर दुनिया भर में काफी पॉपुलर है ज्यादातर कंप्यूटर्स में इंटेल का ही प्रोसेसर लगा होता है। इंटेल के अलावा AMD और ARM जैसे प्रोसेसर्स भी कंप्यूटर्स में होते हैं। इन प्रोसेसर्स में तीन बड़ी खामियां पाई गई हैं जो काफी गंभीर साबित हो सकती हैं। माइक्रोसॉफ्ट ने जानकारी मिलते ही तत्काल प्रभाव से इमरजेंसी पैच जारी कर दिया है। यह पैच Windows7 , Windows 8 और Windows 10 ऑपरेटिंग सिस्टम्स के लिए जारी किया गया है। कंपनी के मुताबिक यूजर्स को डिवाइस कंपनी द्वारा जारी किया गया सॉफ्टवेयर अपडेट भी करना होगा। मतलब ये है कि विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ कंप्यूटर निर्माता द्वारा जारी किया गया सॉफ्टवेयर भी अपडेट करना होगा। Intel, AMD और ARM चिपसेट न सिर्फ कंप्यूटर्स में होते हैं बल्कि दूसरे डिवाइस जैसे मैकबुक और स्मार्टफोन में भी होते हैं।

सुहानी शाम...

इंदौर। सिंदूरी शाम के आगोश में अपना इंदौर।

कभी 2 रुपए नहीं थे जेब में और आज...

राष्ट्रीय पायोनियर प्राइड

मुबंई। बचपन से जीवन में संघर्ष ही संघर्ष। गरीबी की मार। पोलियो से पैर खराब हुआ। मां के साथ गांव-गांव घूम कर चूड़ियां बेचीं। असमय पिता की मौत हुई तो अंतिम संस्कार में पहुंचने के लिए जेब में दो रुपए तक नहीं थे। रिश्तेदारों की मदद से अंतिम संस्कार के लिए गांव तक पहुंच पाए लेकिन अपनी मेहनत के बल पर उन्होंने भाग्य को बदल डाला। आज वे आईएएस अधिकारी हैं।

संघर्ष की यह गाथा है सोलापुर (महाराष्ट्र) के महागांव निवासी रमेश घोलप की। स्थितियां चाहे जितनी भी खराब होती रहीं लेकिन रमेश ने कभी हार नहीं मानी। बिना घबराए कदम-कदम पर संघर्ष का सामना किया और आज वे देश के युवाओं के लिए एक मिसाल बन गए हैं। रमेश को घर में माता-पिता रामू के नाम से पुकारते थे और आज भी गांव में दोस्त और बुजुर्ग उन्हें इसी नाम से बुलाते हैं। रमेश के पिताजी की सोलापुर में पंक्चर सुधारने की दुकान थी। इस दुकान से ही वे परिवार के चार लोगों का भरण-पोषण करते थे। पिता को शराब की लत लग गई और उनकी तबीयत खराब रहने लगी। इलाज के लिए उन्हें सरकारी अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। पंक्चर की दुकान बंद हुई तो परिवार के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया। इस संकट से निपटने के लिए रमेश की मां ने आसपास के गांवों में चूड़ियां बेचने का काम शुरू किया। रमेश और उनके भाई इस काम में मां की मदद करते थे। दोनों उम्र में छोटे थे लेकिन वे मां के साथ गांव-गांव भटकते हुए चूड़ियां बेचते थे। इसी बीच एक और बड़ा संकट आ खड़ा हुआ। पोलियो के कारण रमेश का बांया पैर खराब हो गया। उपचार के लिए पैसे नहीं थे। अब वे मां के साथ नहीं जा पाते थे। रमेश ने गांव के एकमात्र प्रायमरी स्कूल में पढ़ाई जारी रखी। प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के बाद रमेश ने मां से आगे पढ़ने की इच्छा जाहिर की तो उन्होंने रमेश के चाचा से बात की। वे सोलापुर के बार्शी शहर में रहते थे। हालांकि चाचा की आर्थिक स्थिति भी खराब थी लेकिन बार्शी में स्कूल व अन्य सुविधाएं होने के कारण उन्होंने रमेश को वहां बुलवा लिया। बार्शी में रमेश की योग्यता देख कर शिक्षकों ने उनसे कहा कि केवल पढ़ाई ही ऐसा मंत्र है जिससे उनके परिवार की गरीबी दूर हो सकती है। रमेश ने दिल लगाकर पढ़ाई की। वे 12वीं की परीक्षा की तैयारियों में जुटे थे तभी पिता का निधन हो गया। अपने गांव जाने के लिए रमेश के पास 2 रुपए भी नहीं थे। पड़ोसियों ने मदद की तब वे चाचा के साथ गांव पहुंचे और पिता की अंतिम यात्रा में शामिल हो पाए। दुःख की इस घड़ी में उन्होंने हार नहीं मानी और 88 प्रतिशत अंकों के साथ 12वीं की परीक्षा पास की। इसके बाद उन्होंने डिप्लोमा किया और शिक्षक बन गए।

कुछ महीनों के बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी और यूपीएससी की परीक्षा की तैयारी में जुट गए। कड़ी मेहनत के बाद उन्होंने सिविल सेवा परीक्षा में 287वीं रैंक हासिल की। सफलता की ऊंचाईयों के बाद जब वे गांव पहुंचे तो लोगों ने उनका जोरदार स्वागत किया। उन्हें कंधे पर उठा कर गांव में घुमाया गया। अब रामू आईएएस रमेश घोलप बन चुके हैं और वर्तमान में झारखंड में पदस्थ हैं। वे अब भी गरीब बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने हेतु हर दिन कुछ समय निकालते हैं।

जिम्मेदारियों का एहसास

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का आभास होना और वास्तविकता के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाने में फर्क है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करुं तब यह तथ्य किसी से छुपा नहीं है कि मीडिया की भूमिका सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के इस दौर में बढ़ती जा रही है पर क्या यह भूमिका जिम्मेदारी के एहसास के साथ है या फिर यह भी एक भेड़ चाल है। राष्ट्रीय पायोनियर प्राइड की कल्पना केवल अखबार के रुप में हम लोगों ने नहीं की है बल्कि सामाजिक परिवर्तन और अपने संस्कारों व संस्कृति पुर्नस्थापना में अगर हम थोड़ा भी योगदान दे पाएं तब सही मायने में हमें लोकतंत्र के चौथे स्तंभ होने का अधिकार है। राष्ट्रीय पायोनियर प्राइड केवल अखबार नहीं बल्कि यह सामाजिक, शैक्षणिक चेतना का संवाहक बनेगा। यह अखबार नहीं बल्कि आपके परिवार का सदस्य बनेगा। अखबार को उत्पाद की तरह देखा जाने लगा है और इसके माध्यम से लाभ क्या होगा ऐसा अमूमन सभी अखबार देख रहे हैं। विज्ञापनों की सतरंगी दुनिया में मेरे अखबार के पन्ने कौन से रंग में रंगे होंगे इस बात की चिंता सभी को होती है पर तेजी से गिरते सामाजिक मूल्यों को थामने का या उन्हें पुर्नस्थापित करने का बीड़ा कोई उठाना नहीं चाहता क्योंकि अब यह जिम्मेदारी उठाने को कोई तैयार ही नहीं है। अखबार के उत्पाद बन जाने से अखबार मालिकों को फायदा जरुर हुआ पर समाज से नए विचार गायब होने लगे। विभिन्न मुद्दों को सभी कोणों से देखने का दृष्टिकोण ही गायब हो गया और केवल वही अखबारों में परोसा जाने लगा जो बाजार चाहता है। इसका परिणाम यह है कि समाज में टूटन की बातें सामने आ रही हैं। हम सकारात्मक बदलावों को सिर माथे भी चढ़ाएंगे। पाठकों की राय हमारे लिए सर्वोच्च रहेगी। राष्ट्रीय पायोनियर प्राइड को आपके पास पहुंचाने वाली टीम की मेहनत का ही परिणाम है कुछ ही समय में अखबार के पोर्टल को बेहद सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं। संपूर्ण टीम को बधाई...सफर अभी शुरू हुआ है मंजिलें अभी दूर हैं हम पत्रकारिता के मापदंडों का पालन करते हुए राष्ट्रीय पायोनियर प्राइड को उँचाईयों तक ले जाएंगे।

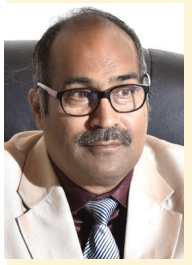

आपका
डॉ. सीए प्रमोद कुमार जैन
प्रधान संपादक

हाईवेज पर अब भी आपातकालीन सुविधाओं का अभाव

सोनकच्छ। प्रदेश में सड़कों का जाल बिछ चुका है और हम यह बात गर्व के साथ कह सकते हैं कि प्रदेश की सड़कें अब किसी भी अन्य राज्यों से कम नहीं हैं बल्कि कई राज्यों से कई गुना बेहतरीन हैं। प्रदेश में सड़कें तो बन गईं और चौड़ी सड़कें बनी हैं जिसका फायदा यह हुआ है कि आवागमन की गति बढ़ी है और जिससे समय की बचत हुई है। पर इसके साथ ही सड़कों पर दुर्घटनाओं का सिलसिला भी बढ़ा है और कई सड़कों पर लगातार दुर्घटनाएं हो रही हैं। कई हाईवेज पर दुर्घटना होने के काफी देर बाद जानकारी मिल पाती है और जिसका परिणाम यह होता है कि समय पर इलाज न मिलने के कारण पीड़ितों की मृत्यु हो जाती है। प्रदेश में हाईवेज का निर्माण बेहतरीन हुआ है पर उसकी तुलना में इन हाईवेज पर आपातकालीन चिकित्सा सुविधाओं का अभाव देखा जा रहा है। कई बार यह होता है कि बसों व कारों में जा रहे लोग दुर्घटना होने पर रात भर दुर्घटनास्थलों पर करहाते रहते हैं और जब वहीं से आने जाने वाले वाहनों के माध्यम से सूचना पुलिस तक पहुंचती है तब जाकर कार्रवाई आरंभ होती है। इस प्रक्रिया के कारण काफी समय जाया हो जाता है और घायलों की स्थितियां गंभीर हो जाती है। वैसे 108 एम्बुलेंस के आ जाने के कारण स्थिति में काफी सुधार आया है परंतु अब भी यह बात महसूस की जा रही है कि सड़क दुर्घटना में पीड़ितों को जल्द से जल्द चिकित्सा सुविधा नहीं मिल पाती।

PIONEER INTERNATIONAL SCHOOL
SONKATCH
PRE-NURSERY TO VIII
ADMISSION OPEN
- SMART CLASSES
- GPS TRACKING
- SMS ALERT
- MONTESSORI
- LIBRARY
- MUSIC & DANCE
- ART & CRAFT
- SUBJECT LAB

PIONEER CAMPUS: Indore-Bhopal Highway, Sanwer, Sonkatch-455118 (M.P.), Contact: +91-9755666128, +91-9893936045
CITY OFFICE: Rotary Bhawan, Somvariya, Sonkatch-455118 (M.P.)

इतना संपन्न था कि कभी 'स्वर्णकच्छ' कहलाता था सोनकच्छ

करीब 26 हजार से अधिक आबादी वाले तहसील मुख्यालय सोनकच्छ का इतिहास स्वर्णिम रहा है। देवास से लगभग बीस किलोमीटर दूर इंदौर-भोपाल मार्ग पर स्थित यह तहसील कभी ग्वालियर रियासत का हिस्सा थी। देवास के नजदीक होने के बावजूद यहां ग्वालियर रियासत का शासन था। इसे कभी सेठ मथुरालाल की नगरी भी कहा जाता था। जब जागीरदारी प्रथा अंतिम दौर में थी तब यहां दो जागीरें थीं-सोनकच्छ और गंजपुरा।

सोनकच्छ। स्थानीय लोगों के अनुसार सोनकच्छ कभी 'स्वर्णकच्छ' कहलाता था अर्थात 'सोने का कछुआ।' नाम से ही स्पष्ट है कि यह इलाका संपन्न था। स्वर्णकच्छ नाम अपभ्रंश होते-होते सोनकच्छ हो गया। यहां हिंदू-मुस्लिम एकता हमेशा बनी रही और आज भी यही स्थिति है। यह इलाका जागीरदारी प्रथा के अंतर्गत रहा। पहले मुस्लिम फिर राजपूत और उसके बाद मराठा शासक रहे। ग्वालियर स्टेट के अधीन रहे इस इलाके में सेठ मथुरालाल गुप्ता प्रमुख व्यक्ति थे जो स्टेट की तरफ से फाइनेंस का कार्य देखते थे। इसलिए सोनकच्छ को सेठ मथुरालाल की नगरी के रूप में भी पहचाना जाता था। यहां की जागीरदारी सरदार खां के नाम पर थी। उनके बाद उनकी पत्नी बिन्नो बी के नाम पर जागीरदारी रही। आज भी सरकारी रिकॉर्ड में कई क्षेत्रों की जमीनें बिन्नो बी के नाम पर हैं। मुस्लिम जागीरदारी के समय के अवशेष अब भी यहां मौजूद हैं।

रियासत के बाद की स्थिति

रियासत समाप्त होने के बाद सोनकच्छ में कांग्रेस का एकतरफा दबदबा रहा। आजादी के बाद पहले विधायक ठाकुर विजयसिंह थे। वे मप्र कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष भी रहे। यहां बघेल परिवार राजनीति में सक्रिय है। राजवीरसिंह बघेल नगर परिषद के अध्यक्ष हैं। राजेंद्र सिंह बघेल हाटपीपल्या विधानसभा क्षेत्र से विधायक रहे हैं।

विकास में योगदान देने वाले प्रमुख लोग

सोनकच्छ क्षेत्र के विकास में अनेक गणमान्य लोगों ने योगदान दिया। इनमें प्रमुख हैं- बाबूराव जोशी, वैद्य गंगाराम जोशी, पं. श्रीवल्लभ शास्त्री, पं. रामचंद्रजी व्यास, डॉ. कासम अली। इनके प्रयासों के कारण ही यहां स्कूल-कॉलेज और अन्य संस्थान खुले। यहां सत्र न्यायालय प्रारंभ करवाने के लिए किए गए प्रयासों में भी उक्त वरिष्ठ नागरिकों के साथ ही अब्दुल हनीफ खान का योगदान भी रहा। यह सभी गणमान्य नागरिक कॉलेज व स्कूल समिति और गीता भवन ट्रस्ट के सदस्य भी रहे।

जनसंघ का गढ़ भी रहा है सोनकच्छ

पूरा क्षेत्र सेंधव और मालवीय बहुल है। क्षेत्र में कांग्रेस का दबदबा रहा जबकि आसपास का इलाका जनसंघ का गढ़ हुआ करता था। जनसंघ का प्रभाव बनाए रखने वालों में प्रमुख नाम हैं- श्री ख्यालीरामजी मेहता, स्व. मानसिंह बघेल, स्व. हुकुमसिंह बघेल, स्व. कस्तूरमल गुप्ता, स्व. नंदकशोर भावसार, स्व. मनोरलाल मेहता, स्व. नंदकिशोर भावसार। यह सभी नेता मीसाबंदी भी रहे और भाजपा के आधार स्तम्भ भी बने।

व्यवसाय बढ़ने की बजाए बंद होते गए

किसी भी क्षेत्र का विकास उद्योग, व्यवसाय बढ़ने और शैक्षणिक व चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध होने के साथ ही होता है। सोनकच्छ में अब भी इन सुविधाओं की दरकार है। यहां व्यवसाय और उद्योग बढ़ने की बजाए सिमटते जा रहे हैं। कभी यहां रेशम केंद्र का संचालन होता था लेकिन शासन की उदासीनता के कारण अंततः केंद्र को बंद करना पड़ा। सोनकच्छ में पांच जीनिंग फैक्ट्रियां भी थीं। क्षेत्र में कपास की पैदावार घटने के कारण अंततः यह फैक्ट्रियां बंद होती गईं। अब यहां खेती और मजदूरी ही रोजगार के प्रमुख साधन हैं।

प्रमुख त्यौहार व आयोजन

सोनकच्छ में सभी वर्गों के लोग मिलजुल कर भाईचारे के साथ रहते हैं। एक-दूसरे के त्यौहारों में शामिल होते हैं। यहां मोहर्रम पर बड़ा आयोजन होता है। मोहर्रम कुछ अलग तरीके से मनाया जाता है। बड़े साहब की सवारी उठाने और देखने के लिए दूर-दूर से लोग यहां पहुंचते हैं। महाशिवरात्रि पर करीब तीस-चालीस साल पहले नपा द्वारा मेला लगाया जाता था लेकिन बाद में उसे बंद कर दिया गया। उसके बाद बीच में एक-दो बार मेले का आयोजन किया भी गया लेकिन सफलता नहीं मिलने अब मेला आयोजित नहीं किया जाता है। बाबा महेश्वरानंदजी उदासी ने सोनकच्छ आकर यहां शिव मंदिर में डेरा डाला था। उनकी प्रेरणा से पीपलेश्वर महादेव मंदिर का भव्य स्वरूप सामने आया। लोग इसे चैतन्य स्थान मानते हैं और यहां नवरात्रि में भव्य उत्सव का आयोजन किया जाता है। नवरात्रि के दौरान भंडारे में सोनकच्छ व आसपास के कई गांवों के लोग शामिल होते हैं। वर्ष भर यहां अन्य स्थानों से दर्शनार्थी आते रहते हैं। पीपलेश्वर मंदिर और पुष्पगिरि तीर्थ ऐसे स्थान हैं जहां राष्ट्रीय स्तर के संतों का आगमन होता रहता है। यहां माता धूमावती का मंदिर भी है। कहा जाता है कि देश में धूमावती माता के केवल तीन मंदिर हैं उनमें से एक यहां है। नवरात्रि में मंदिर में विशेष कार्यक्रम होते हैं।

प्रमुख दर्शनीय स्थल

सोनकच्छ में जैन समाज द्वारा पुष्पगिरि तीर्थ क्षेत्र का निर्माण किया जा रहा है। इसके अलावा यहां उज्जरखेड़ा हनुमान मंदिर, कोटेश्वर महादेव मंदिर, खेड़ापाल मंदिर प्रमुख हैं। गंधर्वपुरी में पुरातत्व विभाग का संग्रहालय है। कभी यह क्षेत्र राजा गंधर्वसेन की नगरी के नाम से जाना जाता रहा है। यहां खुदाई में कई बार खंडित प्रतिमाओं के अवशेष मिलते रहे हैं। देवबड़ला पुरातत्वीय धरोहर है।

राजाभाऊ की कर्मभूमि रहा सोनकच्छ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े अमर शहीद राजाभाऊ महाकाल की कर्मभूमि सोनकच्छ रही। वे गोआ से यहां आए थे और फिर उन्होंने सोनकच्छ को ही अपनी कर्मभूमि बना लिया। सोनकच्छ के शासकीय महाविद्यालय का नामकरण शासन ने राजाभाऊ के नाम पर ही किया है। कालीसिंध नदी के किनारे राजाभाऊ का ओटला बना हुआ है। राजाभाऊ के नाम पर ही उज्जैन का बस स्टैंड भी है।

कभी प्रसिद्ध थी सोनकच्छ की मावाबाटी और कचोरी

इंदौर-भोपाल फोरलेन बनने के पहले बसें सोनकच्छ से गुजरतीं थीं। उस समय यहां की मावाबाटी और कचोरियां प्रसिद्ध थीं। यात्री यहां रुकने के दौरान इनका स्वाद लेते थे और परिजनों के लिए भी खरीद कर ले जाते थे। फोरलेन बनने के बाद बसें अब सोनकच्छ के बाहर से गुजरती हैं इस कारण कचोरी और मावाबाटी को भी लोग भूल गए। यहां कभी पप्पू का ढाबा था जो जायके के नाम पर सोनकच्छ की पहचान बन गया था। अब यह फोरलेन पर पीएनपी रिसोर्ट के नाम से है। इसके संचालक मंजीतसिंह सबरवाल हैं। उनके प्रयासों से ही पप्पू एंड पप्पू की ख्याति देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी है क्योंकि इंदौर-भोपाल की यात्रा करने वालों को इस ढाबे का नाम रटा हुआ है। वे कहीं भी मिलते हैं तो ढाबे के बारे में जरूर चर्चा करते हैं।

प्रतिभाएं हैं लेकिन शिक्षा और खेल की सुविधाएं नहीं

सोनकच्छ क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं हैं लेकिन उन्हें निखारने के लिए सुविधाओं का अभाव है। यहां के बच्चे कलेक्टर से लेकर अन्य उच्च पदों पर आसीन हैं। इन बच्चों को अभिभावकों ने अपने बलबूते पर अन्य शहरों में ले जाकर शिक्षा दिलाई और उन्हें इस योग्य बनाया कि वे न्यायाधीश, आईएएस, इंजीनियर, डॉक्टर जैसे उच्च पदों तक पहुंच सकें। सोनकच्छ के कई बच्चे विदेश में नौकरी कर रहे हैं। खेल क्षेत्र में भगवानसिंह राजूपत सुविधाएं नहीं होने के बावजूद राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी बने और क्षेत्र का नाम रोशन किया। सोनकच्छ का खेल परिसर उन्हीं के नाम पर है। शासन ने सोनकच्छ के लिए स्टेडियम निर्माण की मंजूरी दी लेकिन यहां शासकीय भूमि उपलब्ध नहीं होने के कारण स्टेडियम 40 किलोमीटर दूर पीपलरांवा में बनाया गया।

कभी नाव से पार करनी पड़ती थी नदी

पहले कालीसिंध नदी पर पुल नहीं था। लोगों को नदी पार करने के लिए नाव का सहारा लेना पड़ता था। स्व. किशनसिंह सेंगर नावों का संचालन करते थे। क्षेत्र में पहली बस भी वे ही लेकर आए थे। इसी परिवार द्वारा अब भी परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। घनश्याम बस सर्विस इसी परिवार की है और यह क्षेत्र की सबसे बड़ी बस एजेंसी है।

विकास का इंतजार कर रहे हैं क्षेत्र के नागरिक

यह क्षेत्र कालीसिंध नदी के समीप बसा होने के कारण खेती यहां का प्रमुख व्यवसाय है। पानी की कमी नहीं है। इसके बावजूद यहां कोई उद्योग अथवा व्यवसाय नहीं है। जरूरत के अनुसार विकास नहीं होने के कारण लोगों को रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा व अन्य सुविधाओं के लिए यहां से पलायन करना पड़ा। आज भी इन सभी मामलों में यह क्षेत्र भोपाल, देवास और इंदौर पर निर्भर है। यहां बेहतर उद्यान और सिनेमा हॉल तक नहीं है। बुनियादी सुविधाएं नहीं होने के कारण आबादी लगभग 20 से 26 हजार के बीच ही सिमट कर रह गई जबकि बढ़ते क्रम में अब तक आबादी साठ हजार से एक लाख के बीच होनी थी। वर्तमान में यहां जिला एवं सत्र न्यायालय, शासकीय अस्पताल, पशु चिकित्सालय, कॉलेज व शासकीय स्कूल हैं। इसके अलावा एसडीओ कार्यालय, पुलिस का अनुविभागीय कार्यालय भी है। तहसील कार्यालय व रेस्ट हाऊस 1928 में बने भवन में संचालित हो रहे हैं। स्थानीय लोगों के अनुसार यहां का प्रमुख रोजगार का साधन केवल मंडी है। मंडी में पहले आसपास के किसान बड़ी संख्या में आते थे लेकिन धीरे-धीरे उनकी संख्या में भी कमी आई और यहां की बजाए कई किसान देवास की मंडी में जा रहे हैं।

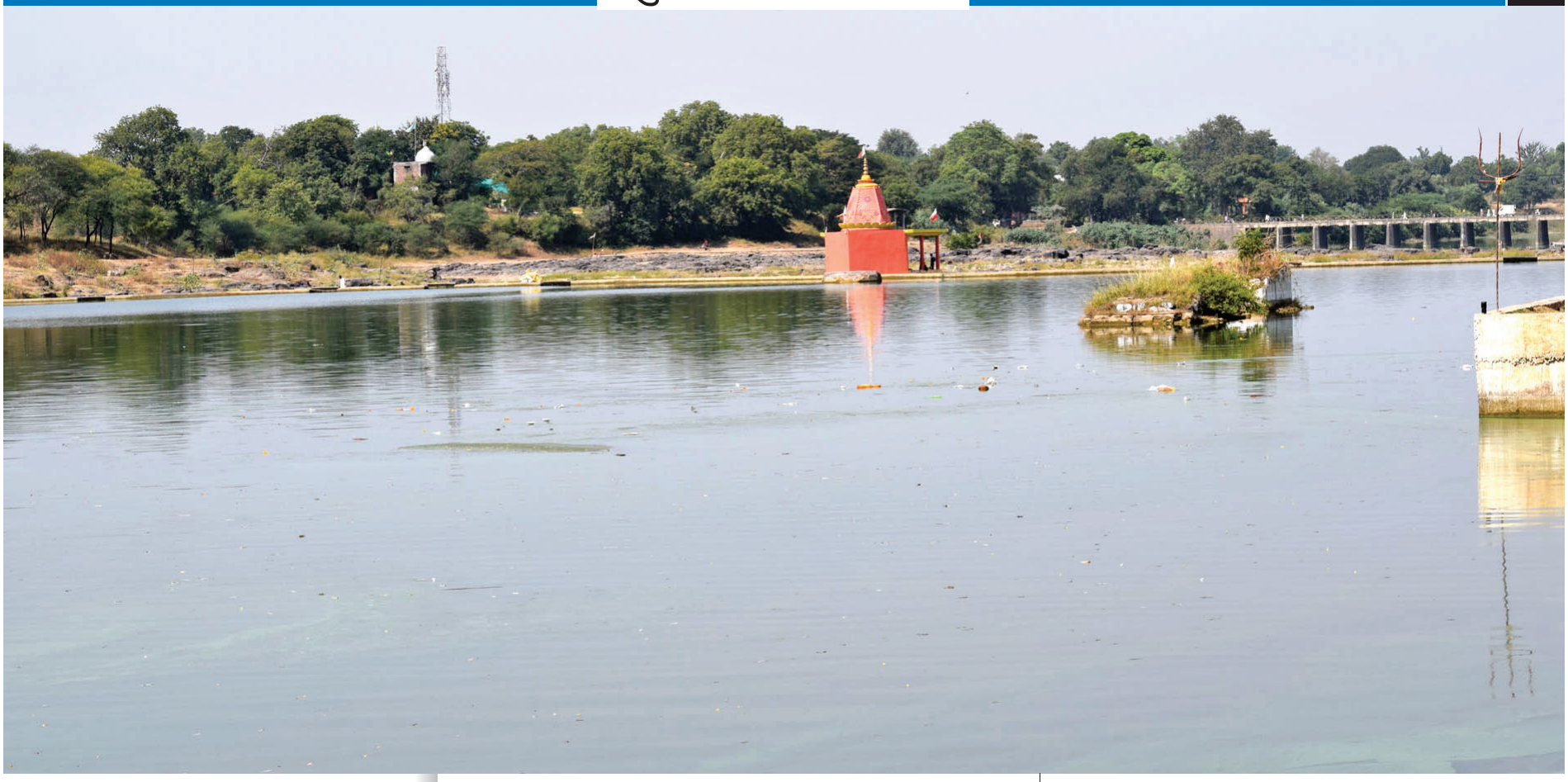

शिक्षा में नवोन्मेषी प्रयोग जरूरी

बदलती परिस्थितियों और तकनीक के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तनों के दौर आते रहे हैं। इन परिवर्तनों के दौर में भी संस्कारों और मूल्यों का महत्व कभी कम नहीं हुआ है। हमारी शिक्षण पद्धति ने भले ही कितनी ही नई बातों को विदेशी शिक्षण पद्धतियों से गोद लिया हो पर हमने भारतीय संस्कारों और मूल्यों को न कभी छोड़ा और न ही छोड़ेंगे। पायोनियर इंटरनेशनल स्कूल में हम बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षण पद्धति के माध्यम से आगे बढ़ाएंगे।

पायोनियर समूह ने हमेशा से ही शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता से समझौता नहीं किया है। हमने कई नए प्रयोग जरुर किए पर ये सभी नवोन्मेषी प्रयोग गुणवत्ता के साथ समझौते के बगैर ही किए हैं। पायोनियर समूह में हम सभी का मानना है कि हरेक बच्चे की पढ़ने की क्षमता और गति अलग-अलग होती है। इस गति को पहचानना और बच्चे की ग्राह्य क्षमता के अनुरुप काम करना अपने आप में चुनौतीपूर्ण कार्य होता है और पायोनियर समूह में हम चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार करते हैं। शिक्षा प्रदान करना उन्हीं के वश की बात है जो दिल से शिक्षा क्षेत्र में काम करना चाहते हों। पायोनियर इंटरनेशनल स्कूल में हम गुणवत्ता से किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करेंगे। हम बच्चों को नवीन प्रयोगों और नवीन शिक्षण पद्धति के माध्यम से शिक्षा प्रदान करेंगे। हरेक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देने के साथ ही पालकों के साथ सतत संवाद हम कायम करेंगे। बच्चे का सम्पूर्ण विकास तभी संभव है जब शिक्षक पालक मिलकर काम करेंगे। हम बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं और नवोन्मेषी प्रयोगों के माध्यम से हम बच्चों को शिक्षा तो प्रदान करेंगे ही साथ में उनमें निहित अलग तरह के गुणों का विकास भी करेंगे। बच्चे खेलकूद से लेकर गीत-संगीत के माध्यम से अपने आप में विकास होते हुए महसूस करेंगे। इतना ही नहीं प्रयोग किताबों से लेकर व्यक्तित्व विकास के लिए भी होंगे और निश्चित रुप से बच्चों को ये बहुत पसंद आएंगे।

पायोनियर इंटरनेशनल स्कूल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी

मुझे खुशी है कि शिक्षा के क्षेत्र में प्रसिद्ध पायोनियर ग्रुप ने शैक्षणिक गतिविधियों के विस्तार के लिए सोनकच्छ जैसे स्थान का चयन किया है। इस ग्रुप के यहां आने से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी, जिसकी कि इस क्षेत्र में नितांत आवश्यकता है। पायोनियर ग्रुप से मैं लंबे समय से जुड़ा रहा हूं। इंदौर में इस ग्रुप का पूरा सेटअप मैने देखा है। इस कारण विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि यहां प्रारंभ हो रहा शिक्षा केंद्र सोनकच्छ क्षेत्र के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि साबित होगा। **शुभकामनाएं।**

- श्री सत्यनारायण लाठी, वरिष्ठ एडवोकेट, रोटरी के पूर्व गवर्नर, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष तथा समाजसेवी

पूरी तरह सफलता हासिल होगी

यह हर्ष की बात है कि पिछले पच्चीस वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत पायोनियर ग्रुप इंदौर के बाद अब सोनकच्छ में इतना बड़ा शैक्षणिक केंद्र प्रारंभ कर रहा है। रोटरी के कार्यक्रम में मुझे इंदौर स्थित पायोनियर इंस्टीट्यूट में जाने का अवसर मिला था। वहां शैक्षणिक सुविधाओं के लिए किए जा रहे गुणवत्तापूर्ण प्रयासों को देख कर मैं खासा प्रभावित हुआ और मैं पूरी तरह आश्वस्त हूं कि जिस उद्देश्य से संस्थान सोनकच्छ में प्रारंभ किया जा रहा है उसमें पूरी तरह से सफलता हासिल होगी। शुभकामनाएं।

-डॉ. जामिन हुसैन, रोटरी गवर्नर (3040)

अब अन्य शहरों में नहीं जाना पड़ेगा बच्चों को

सोनकच्छ में पायोनियर ग्रुप द्वारा राष्ट्रीय स्तर का शिक्षा केंद्र प्रारंभ करने से निश्चित ही क्षेत्र के विद्यार्थियों का स्तर ऊंचा उठेगा। अभिभावकों की चिंता समाप्त होगी और उन्हें अपने बच्चों को पढ़ने के लिए अन्य शहरों में नहीं भेजना पड़ेगा। पायोनियर ग्रुप के शिक्षा के क्षेत्र में 25 वर्षों के अनुभव का लाभ अब सोनकच्छ और आसपास के क्षेत्रों को मिलेगा। इंदौर में ग्रुप द्वारा जिस स्तर की सुविधाएं जुटाई गई हैं वही सुविधाएं अब सोनकच्छ में भी विद्यार्थियों को मिलेंगी। नींव मजबूत होगी तभी भविष्य में विद्यार्थी प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार हो सकेंगे।

शुभकामनाएं।

- त्रिलोकचंद जैन, पूर्व शिक्षक

बच्चों का भविष्य बेहतर होगा

शिक्षा के क्षेत्र में सोनकच्छ में पायोनियर ग्रुप का पदार्पण निश्चित ही यहां के शैक्षणिक स्तर को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाएगा। यहां की शैक्षणिक गतिविधियों को नई दिशा मिलेगी और बच्चे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धाओं का सामना करने के लिए तैयार हो सकेंगे। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अभिभावकों को बच्चों को अन्य शहरों में नहीं भिजवाना पड़ेगा। पायोनियर ग्रुप के संस्थान से न केवल सोनकच्छ बल्कि आसपास के कई गांवों के बच्चों का भविष्य भी बेहतर होगा।

-महेश सामरिया, वरिष्ठ शिक्षक

सोनकच्छ के लिए बड़ी उपलब्धि

पायोनियर ग्रुप के इंदौर स्थित शैक्षणिक परिसर को मैने देखा है। स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए ग्रुप द्वारा हर तरह की शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इंदौर के समान ही सोनकच्छ में विशाल परिसर में शैक्षणिक केंद्र प्रारंभ किया जा रहा है। यह निश्चित ही सोनकच्छ के लिए बड़ी उपलब्धि है। पायोनियर ग्रुप के आने से यहां का शैक्षणिक माहौल बदलेगा और यहां के बच्चे भी अब महानगर स्तर की शैक्षणिक सुविधाओं के साथ अपनी प्रतिभा को निखार सकेंगे। शुभकामनाएं

- जगजीतसिंह सलूजा, अध्यक्ष व्यापारी संघ, सोनकच्छ।

The Strength of Thinking Process

The thoughts that pass through your mind are responsible for everything that happens in your life. Your predominant thoughts influence your behavior and attitude and control your actions and reactions. As your thoughts are, so is your life.

BE CAREFUL OF WHAT YOU THINK

Thoughts are like a video that plays on the screen of your mind. What you play there, determines the kind of life you live and the experiences you meet. To make changes in your life, you have to play a different video, one that you like more.

We can choose to think as an optimist and have a positive view on life or we can choose to think as a pessimist and have a negative view on life.

The Power of Thoughts Is a Creative Power

Our thoughts are very powerful and science is doing exciting experiments with the power of thoughts. You can train and strengthen this power. You can use it to make changes in your life, and also to influence other people's mind.

If you plant seeds, water them, and give them fertilizers, they will grow into healthy and strong plants.

Your thoughts pass from your conscious mind to your subconscious mind, which in turn, influence your actions in accordance with these thoughts. Your thoughts also pass to other minds, and consequently, people who are in a position to help you, might offer you their help, sometimes, without even knowing why. This might some strange and unbelievable. You don't have to accept these words, but if you analyze the kind of thoughts you think, and the kind of life you live, you will discover interesting things about the mind.

The power of your mind is part of the creative power of the Universe, which means that your thoughts work together with it. You are a manifestation of the Universal mind. When you repeat the same thought over and again, in one way or another, this mighty power helps you make your thoughts come true. Using the power of thoughts effectively, is an act of "practical daydreaming". A man is but the product of his thoughts - what he thinks, he becomes

:Mahatma Gandhi

Work Life Balance

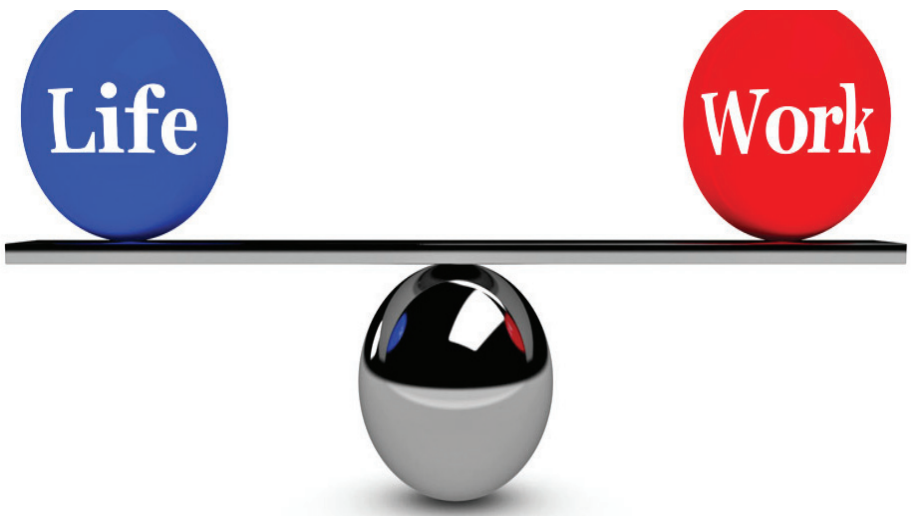

Despite the worldwide quest for Work-Life Balance, a standard de nition of this concept could not be given because 'Work-Life balance' is a comprehensive term in itself and hence difficult to de ne!

However, everyday concepts will help us understand it in an effective way; Achievement and Enjoyment.

Most of us already have a good grasp on the meaning of Achievement. But let's explore the concept of Enjoyment a little more…

Enjoyment is nothing but the satisfaction that we get after doing or seeing some things. There are many ways to describe the word enjoyment. Enjoyment does not just mean Happiness. It means Pride, Satisfaction, Happiness, Celebration, Love, A Sense of Well Being …all the Joys of Living. It however depends on the perspective of a person and that word enjoyment has its own different meaning when it comes to each and every individual.

Achievement and Enjoyment are the front and back of the coin of value in life. We cannot get the full value from life without BOTH Achievement and Enjoyment. The terms compliment each other in a complete way. Life will deliver the value and balance we desire …when we are achieving and enjoying something every single day…in all the important areas that make up our lives. As a result, a good working de nition of Work-Life Balance is:

Meaningful daily Achievement and Enjoyment in each of the four life quadrants: Work, Family, Friends and Self.

At work we can create our own best Work-Life Balance by making sure we not only Achieve, but also enjoy our work every day. Make sure that if nobody pats you on the back today, pat yourself on the back and help others to do the same. When you do so, it attracts people towards you and they wish to have you in their team.

Once we focus on them as key components of our day, they are not that hard to implement. So, make it happen, for yourself, your family and all the important persons you care about… Achieve and Enjoy….

My Memories

As a kid, when I happened to see any stunning sight, I befitted to be the central part of self intellect

I still remember myself standing or sitting, as the depiction and representation was apprehended and arrested by my brain, wits and senses and arrested in the inventory of my brain.

As we progressed, the focus was just to have few more pictures to be captured in camera that took efforts….also incurred some cost. So, some times very few photographs were captured, that too after a long interval……

When I gaze some of my old snapshots, I feel like gazing again and again and those images have become an important part of my recollection. But now when I have got all the tremendous power, I have plenty of my pictures, most of them meaningless, as most of them look alike, and so sometimes I delete most of my pics….and so most of "my – self" …..as most of my pictures are garbage for me….just taking lot of memory.

But still, I thank the Digital world to give me the awesome power to keep each fraction of second of my present and past in records……

— Dr. Mona Singh

Body Language Is More Revealing Than Words

Our bodies can often be more honest than our words when it comes to communicating our thoughts, feelings, and intentions.

When we choose what to say, we're often using the executive parts of our brains . This part of the brain is responsible for conscious attention, language, and thinking, all of which we have a degree of control over with some effort. Because we have a choice in what we say, this makes it easier to conceal, deceive, and lie with our words.

However, we don't usually choose our body language, which comes from the automatic parts of our brains . This part of the brain is responsible for our emotions, instincts, and gut reactions, all of which we don't normally have control over.Because our body language is more automatic than our speech, this makes it harder to conceal, deceive, and lie about our true thoughts and feelings through our bodies. Therefore, if you want to learn how to better read people and understand what's going on inside their minds, you need to listen more to what their bodies are communicating to you.

Especially if it doesn't match up with what they are saying. Most of us know how to choose our words carefully. We are taught from an early age how to act polite and kind even when we don't want to – or how to tell a harmless lie to protect someone's feelings.

However, we don't often pay attention to what our body language is communicating. And because it happens automatically without us deliberately choosing, it's harder to override how our body responds to a situation. Our bodies rarely lie.

We always have to read nonverbal signals in the context of the person and the situation. For example, a person might just be covering themselves up because they are cold, or they may be speaking in a monotone voice because they are tired, or they are leaning away from the person because they are a little shy .

This is also why it's very important to always establish a "baseline of behaviors" for each person and ultimately pay attention to changes in their baseline rather than believing a nonverbal signal always means something.

To get a handle on the baseline behaviors of the people with whom you regularly interact, you need to note how they look normally, how they typically sit, where they place their hands, the usual position of their feet, their posture and common facial expressions, the tilt of their heads, and even where they generally place or hold possessions, such as a purse. You need to be able to differentiate between their 'normal' face and their 'stressed' face. Even in a single encounter with someone, you should attempt to note his or her 'starting position' at the beginning of your interaction. Establishing a person's baseline behaviour is critical because it allows you to determine when he or she deviates from it, which can be very important and informative.

Without a baseline, it's impossible to get any accurate read on a person's body language. You first need to know how they act naturally before you can notice any change or deviance in their behavior.

We don't normally pay attention to body language but with practice it can become a habit that we begin doing automatically. Because our body can often be more truthful than our speech, focusing more on body language can be one of the most important tools you have in becoming a more effective listener and communicator. Once you become more attuned to body language, one of the biggest signs that someone is trying to conceal, deceive, or lie to you is when there is a lack of synchronicity between what someone says and what their body says.

Courtesy

Women Empowerment And Growth

Nobel Laureate Malala Yousafzai famously quoted "I raise up my voice—not so I can shout, but so that those without a voice can be heard…we cannot succeed when half of us are held back.", and that sentiment precisely outlines the basis of new age women empowerment. Discrimination against women is rampant all over the world even in this 21st century.Women's empowerment entails increasing the economic, socialand politicalstrength of women's. It has one prerequisite that isgender equality. Even though about 50% of the world's population consists of women, but unfortunately most of them are denied basic rights education, freedom of speech, voting power and even independent identity. Crimes directed specifically against women are reported from all over the world. There still remain questions about acceptance of women empowerment in the most advanced of countries, while developing nations and nations under political duress are far from achieving the desired status.

Empowerment of women would mean encouraging women to be self-reliant, economically independent, have positive self-esteem, generate confidence to face any difficult situation and incite active participation in various socio-political development endeavours. The growing conscience is to accept women as individuals capable of making rational and educated decisions about them as well as the society, increasing and improving the economic, political and legal strength of the women, to ensure equal-right as men, achieve internationally agreed goals for development and sustainability, and improve the quality of life for their families and communities.

When you educate a boy, you educate one individual, when you educate a girl you educate a Nation"
—Larry Summers

In major parts of India as well as the world, women are still denied basic education and are never allowed to pursue higher education despite possessing the acumen needed.Women empowerment in its actuality is synonymous with complete development of the society. An educated woman, with knowledge about health, hygiene, cleanliness is capable of creating a better disease-free environment for her family. A self-employed woman is capable of contributing not only to her family's finances, but also contributes towards increment of the country's overall GDP.

Source: www.cultureindia.net

A Partition Between Self and Family

The new and prevalent culture and technology have undesirable effect on children's and adult's relationships. The increased use of technology has created division and friction in self and family relations, along with the social relations as well.

The youth, who is too unobtainable because of habitation with technology, from texting to playing games, to WhatsApp, to the disproportionatepractice on FB is limiting their convenience to unite with their parents. Correspondingly the injected ear pieces invigorates lost links.

The very prompt messaging, relentlessly……. prompt recitation over social media, attending to melody, surfing their chosen web sites, watching videos and movies has limited the self to the home.

This scene is common everywhere, in cars, at restaurants, picnic spots, theatres, parks, hospitals and even on traffic signals. Even the elders are too often wrapped up in technology.

The complications of this estrangement are thoughtful. Fewerassociationemboldensstrangeness, discomposure, disbelief, timidity, and the minusaffection for parents.

So we need to change the hierarchy of relationships……Parents, Children, Relatives, Friendships, Romantic Relationships……..or just getting lost in an unknown world of strangers……

—Dr. Mona Tawar

Newton's First Law of Motion

A body in motion will remain in motion and a body at rest will remain there until some force is applied on it. We can observe in day to day life that people have resistance towards the change. If a person is having a habit to awake till late in night, if allowed to sleep early he will not be able to sleep. Similarly if some one has habit to wake up early he will wake up without alarm. We also observe resistance to change among people if we change the way the go to office or they do their work.

NEWTON'S SECOND LAW OF MOTION

Newton's Second Law of Motion explains that if you apply force upon an object, it will accelerate in the direction that you push it. If you push twice as hard, it will accelerate twice as much. Here we can relate this push as motivation to one person, more the motivation more he will move. But this law has one more part that is mass which plays a vital role. more the mass less the acceleration required.

NEWTON'S THIRD LAW OF MOTION

For every action there is equal and opposite reaction . Newton is telling us that if we push on an object, it will push on us just as hard. In other words, we can't touch without being touched. To make some one understand we first need to understand that point.

In other perspect what ever we give to the world returns back to us. If we observe these laws it may help us to understand this world better.

Sumit Zokarkar
-A student in the class of Life

आखिर किसानों की कौन सुन रहा है ?

विकसित होते देश में विकास का पैमाना हम किसे मान रहे हैं ? क्या शहरों में बड़े बहुमंजिला भवन बन जाना और चमचमाती गाड़ियों को सड़कों पर दौड़ता देखना ही विकास है? अक्सर ग्रामीण क्षेत्र की अनदेखी बड़े अर्थशास्त्री भी कर जाते हैं। आज देश में जिस गति से शहरी क्षेत्रों में विकास हो रहा है उसी गति से ग्रामीण क्षेत्रों में भी हो इसके लिए प्रयास चल रहे हैं पर क्या वाकई ग्रामीण क्षेत्रों में और खासतौर पर किसानों की सुनी जा रही है।

अनुराग तागड़े

टेलीविजन पर अच्छे विज्ञापनों में किसानों को प्रगति करते हुए हम लगातार देख रहे पर क्या वाकई देश में किसानों की स्थितियां और परिस्थितियां बदली है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी अगर हम धरतीपुत्रों के बारे में विचार नहीं करेंगे तब कब करेंगे? ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में बदलाव आए हैं और यह बदलाव सकारात्मक भी हैं पर इससे किसान कितने जुड़े हैं और किसान के घरों में कितनी समृद्धि आई। यह प्रश्न लगातार उठ रहे हैं और सरकारें कितनी आईं और गईं सभी ने किसानों के दर्द को समझा जरुर पर ठोस योजनाओं का अभाव नजर आता है। केवल मोबाईल पर बीजों और फसलों के बारे में जानकारियां देना और किसानों को मंडी के भावों के बारे में बताने से किसानों की स्थितियों में परिवर्तन नहीं आ सकते। खेती के बदलते स्वरुपों की जानकारियां किसानों तक पहुंच पा रही हैं या नहीं? क्या किसान की आर्थिक परिस्थितियों में किसी प्रकार के बदलाव आए हैं या नहीं? इन सभी प्रश्नों के उत्तर समग्रता से देखना जरुरी है। विकास के मायने ग्रामीण क्षेत्रों में अगर बदल भी रहे हैं तब उसमें किसान कहां है? किसानों की कौन सुन रहा है और एक बात जो सबसे महत्वपूर्ण है कि किसान अपने हकों के लिए आगे वाकई आ रहे हैं या उनका केवल फायदा ही उठाया जा रहा है। आज देश को तेज गति से आगे बढ़ने के लिए न केवल शहरी बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की ओर ध्यान से देखना जरुरी है। आज सरकारें अगर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की ओर समान रुप से देखें तब निश्चित रुप से विकास की गति काफी तेज हो सकती है।

परमात्मा का भेद जानने की ओढ

डॉ. सीए प्रशांत जैन

मन को नियंत्रित करने की बातें सुनने में काफी अच्छी लगती हैं पर कम लोग ही नियंत्रण की बात को आत्मसात कर पाते हैं। यह राह अपने आप में बिरली है जिस पर चल पाना हरेक के बस की बात नहीं है क्योंकि नियंत्रण हम आदतों पर नहीं कर पाते तब मन के नियंत्रण की बात बहुत दूर हो जाती है। मन को चंचल कहा गया है पर असल में मन का स्वरुप सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रहता है जैसे हीरो और विलेन फिल्मों में रहते हैं वैसे ही मन की अवस्था भी होती है वह किसी भी घटना को लेकर तत्काल आपको उसके सभी पक्षों से अवगत करवा देता है। अवगत करवाने वाली प्रक्रिया इस बात पर निर्भर करती है कि आप किस परिवेश में पले बढ़े हैं और आप किस वातावरण में रह रहे हैं। मन आदत में पड़ जाता है पर उस दौर में भी आपको लगातार अपनी बात बताता रहता है यह बात अलग होती है कि हम सुनते नहीं हैं। इन सभी बातों के बीच जब मन को नियंत्रित करने की बात आती है तब मन विद्रोही तेवर ही अपना लेता है व नियंत्रित नहीं होना चाहता वह आवारागर्दी करने लगता है और

कई बार बावले की तरह हरकतें भी करता है। वह अपने घोड़े दौड़ाने में ज्यादा विश्वास करता है और बार बार पुरानी यादों के सहारे अपने तर्कों को प्रस्तुत करते रहता है भले ही वर्तमान उससे मेल न खाता हो पर वह अपने तर्कों पर अडिग रहने की आदत से बाज नहीं आता।

मन परमात्मा का भेद जानने के लिए भीतर से लालायित रहता है परंतु परिस्थितियों को सच मानकर वह नियंत्रित नहीं होना चाहता और परमात्मा को मानता जरुर है पर जानने का प्रयत्न नहीं करना चाहता। वह जानता है कि उसकी जड़ वह है और चैतन्यता की ओर जाना है तब परमात्मा की ओढ के आगोश में स्वयं को ले जाना पड़ेगा परंतु फिर भी नहीं मानता। कई बार समय अपने आप यह करवाने के लिए बाध्य करता है और मन परमतत्व को जानने की चाह में नियंत्रित होने की कला को सीखने का प्रयत्न करता है। यह प्रयत्न कठिन होते हैं इतने कठिन कि भटकाव हर क्षण होता ही रहता है। समय, परिस्थितियां और स्वयं मन ही भटकाव का कारण होता है। परमात्मा की ओढ में मन जब लगता है तब यह रास्ता सुखों की खान की ओर जाने जैसा है यह सुख भौतिक सुखों की तुलना से परे है। इसमें आनंद, सुख और किसी अपने से मिलने की भावनाएं होती हैं। परमात्मा को देखने, पाने और उसका सामीप्य पाने की लालसा अपने आप में सुखकारी है और यह प्रक्रिया आनंद से भरी है जिसमें बरबस आंखों से कभी भी कहीं पर भी आंसू ढुलक पड़ते हैं। आनंद अश्रुओं की धारा जब बहती है तब अपने आप में ऐसे सुख की अनुभूति होती है जिसकी कल्पना सामान्यतौर पर नहीं हो पाती। परमात्मा का अंश याने हम चुंबक की भांति उसकी ओर खिंचे चले जाते हैं पर यह ओढ हमें खुद ढूंढना पड़ती है, हमें स्वयं प्रयत्न करना पड़ते हैं, तब जाकर परमात्मा की छाया के दर्शन हो पाते हैं वह भी बिरलों को।

खुशियां

खुशियां ले लो खुशियां, जीवन भर की खुशियां...

अरे भाई बताओ तो, क्या क्या है तुम्हारी झोली में?

ये लो साहब ... ये हल्की फुल्की बचपन की शरारतें हैं, घना सा मां बाप का साया है, गुलाबी प्रेम है, खुशबूदार दोस्ती है, मीठी सी किलकारी है, रंगीन घर की फुलवारी है....

अरे... इसमें वो नही है.... वो .. रुपया?

दद्दू! मैं खुशियां बांटने निकला हूं... दूरियां नहीं।

झोली भर खुशियां लेकर वो चला गया।

और सुदूर आकाश में एक विमान से निकलता धुआं धीरे-धीरे माथे की सलवटों में ढलता गया।

जवाब

अरे विश्वास, ये तुम्हारा गांव का जीवन देखकर तो सचमुच बड़ा अच्छा लग रहा है। मेरे बच्चों का तो कहना है कि विश्वास अंकल का रोज़ ही वीकेंड है।

इमारतें, चकाचौंध देखकर थक जाते हैं यार। असली ज़िंदगी तो तू ही जी रहा है।

मैं भी ज़िम्मेदारियां पूरी करने के बाद अपने गांव जाकर ही बसने का मन बना रहा हूं।

वाकई, लेकिन शहर की प्रगति से दूर, यहां रहते हुए, तुम पीछे नहीं रह जाओगे दोस्त? जो सुविधा शहर में है, वो गांव में कहां?

दोस्तों, मैं गांव में ज़रुर हूं, लेकिन पिछड़ा नही हूं। वैसे भी जब शहर में बनावट का दखल बढ़ जाता है, तब शुद्धता, जैविक, देसी और अपनी जड़ों के रुप में वहां व्यापार शुरु हो जाता है। थका मांदा तुम जैसा शहरी भी तो मॉल की जगह खेत में ही खुशी पाता है।

ये सब बदलाव के लिये ठीक है विश्वास लेकिन कल को तुम्हारे बच्चे यदि शहर में ना रहने के तुम्हारे फैसले पर सवाल करेंगे तो?

उन्होंने सवाल किये थे, पिछले हफ्ते ही किये थे।

फिर?

इसीलिये तो तुम सभी को बुलाया है यहां, बच्चों को आईना दिखाने के लिये.....

अन्तरा करवड़े

दिल के किसी कोने में दुःख छिपा बैठा रहता है और हमारी इच्छा यही रहती है कि दुःख उसी कोने में पड़ा रहे। वहीं सुख को हम अपने सिर पर बैठा कर नचाते हैं और कामना करते हैं कि सुख नाचता रहे और हम भी उसकी धुन पर नाचते रहें।

सुख के रिश्ते

दिलीप सिंह ठाकुर

सुख क्या है? क्या कभी विचार किया कि आखिर सुख क्या ज्यादा पैसा कमाने में, किसी से प्रतिस्पर्धा में जीतने में या किसी को दुःख देने में है? कई व्यक्ति होते हैं जिन्हें दूसरों को दुःख देने में ही सुख मिलता है। ऐसे लोगों की संख्या कम है पर है जरुर। सुख हम घर पर ढूंढते हैं अपने रिश्तों में, अपने माता पिता, बच्चों, पत्नी की खुशियों में याने अपने घर की खुशियों में। घर की खुशियां हमारे लिए सर्वोपरि हैं। इसी के लिए तो व्यक्ति दिन रात मेहनत करता है कि घर में खुशियां भरी रहें और सुख ही सुख पसरा रहे। रिश्तों में जरा सा असंतुलन हमारी सुख की कल्पनाओं को झकझोर देता है। हम स्वयं सोचने लगते हैं कि यह असंतुलन क्यों हुआ और कहां कमी रह गई।

घर पर आपसी रिश्तों में जहाँ प्रेमभाव रहता है वहीं समय के साथ साथ कभी कड़वाहट भी आ जाती हैं। कभी मनमुटाव भी होता है पर व्यक्ति परिवार टूटने के डर से इस मनमुटाव को स्वयं के व्यक्तित्व की सतह पर नहीं आने देता। यह मनमुटाव भीतर ही रहने देता है। इस कारण भीतरी मन में कहीं न कहीं

यह मनमुटाव खुदबुदाता रहता है। वह बार बार प्रश्न करता है और आपसे पूछता है कि ऐसा क्यों कर रहे हो? ऐसे समय एकबारगी व्यक्ति यह भी सोचने लगता है कि वह भावनाओं की गर्माहट भरे रिश्ते निभा रहा है या मात्र रिश्ते को येन केन तरीके से ढो रहा है। इसका असर व्यक्ति के सार्वजनिक जीवन पर भी पड़ता है पर वह रिश्तों का एडजस्टमेंट करता रहता है। उसे पता रहता है कि अगर वह एडजस्टमेंट नहीं कर पाया तब क्या होगा? बिखराव, दुःख, अलगाव सभी कुछ घेर लेंगे मनुष्य वैसे प्राकृतिक रुप से सकारात्मक ही रहता है इस कारण वह इस एडजस्टमेंट को सुख का रिश्ता मानकर जिंदगी में आगे बढ़ता रहता है। दरअसल व्यक्ति कभी भी नहीं चाहता कि रिश्तों में खासतौर पर पारिवारिक रिश्तों में खटास आए। वह परिस्थितियों के आगे झुक जाता है भले ही स्वयं के व्यक्तित्व की बलि उसे देना पड़े। पर एक बात है कि सुख के रिश्तों की बुनियाद खुली बातचीत में है और मनमुटाव होने पर तत्काल उसे बातचीत का सहारा लेकर समस्या का हल खोजना चाहिए। कई बार समय के साथ आपसी मनमुटाव के घाव इतने गहरे हो जाते हैं कि वह वापस गर्माहट भरे रिश्तों की ओर लौट ही नहीं पाता। वह इतनी दूर जा चुका रहता है कि वापसी करना उसके लिए मुश्किल भरा हो जाता है। इस कारण सुख के रिश्तों को बनाए रखने के लिए लगातार बातचीत जरुरी है स्वयं से भी और प्रियजनों से भी, तभी सुख के रिश्ते ताउम्र ताजगी लिए हुए रहेंगें और आपको स्वयं से भाग कर इतनी दूर न जाना पड़ेगा कि लौटने का कोई रास्ता ही न बचे।

जब एसआरके मिले कल के संगीतकार से

टेड टॉक्स इंडिया नई सोच एक ऐसा शो है जो अपने अनूठे आइडियाज से लाखों लोगों को प्रेरित कर रहा है। इसके आगामी एपिसोड में लुभावने स्पीकर्स भविष्य के बारे में अपने आइडियाज साझा करेंगे। तकनीक जिस रफ्तार से विकसित हो रही है, उसे नापसंद करने वाले शो के होस्ट शाहरुख खान को परफॉर्मर लीडियन नदास्वरम से अभिभूत होते हुए देखा गया। लीडियन एक विलक्षण बच्चा होने के साथ ही एक उम्दा पियानोवादक है। कल के संगीतकार (टुमॉरोज म्यूजिशियन) के रूप में बुलाये गये लीडियन का शाहरुख खान ने तहे दिल से स्वागत किया और परफॉर्मेंस से पहले उन्हें गले लगा लिया। अपने संगीत के बारे में बताते हुए लीडियन ने कहा, मैं वीडियो गेम्स नहीं खेलता या मैं ट्विटर का इस्तेमाल नहीं करता हूं, मैं अपनी उंगलियों का इस्तेमाल अच्छा संगीत बनाने के लिये करता हूं। लीडियन के परफॉर्मेंस ने शाहरुख खान को अचंभित कर दिया और उन्होंने कहा, मैं लीडियन के हुनर को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया हूं।

टीवी पर यह मेरा पहला पौराणिक शो है

सोनी टीवी पर पृथ्वी वल्लभ धारावाहिक इस माह के अंत से आरंभ होने वाला है। इस शो में उज्जवला की भूमिका निभा रही गुरदीप कोहली से विशेष बातचीत। यह शो अपने आप में काफी बड़े कैनवास वाला है और इसमें स्पेशल इफेक्ट्स से लेकर कई बातों का समावेश किया गया है।

भारतीय टेलीविजन पर 'पृथ्वी वल्लभ' आपका पहला ऐतिहासिक शो है, आपने इस विषय को किस वजह से चुना?

हां, 'पृथ्वी वल्लभ' भारतीय टेलीविजन पर मेरा पहला पौराणिक शो है। मुझे आशा है कि दर्शक निश्चित रूप से मेरे काम की प्रशंसा करेंगे। जब मुझे यह भूमिका ऑफर की गई थी, तो मुझे तुरंत ही उज्ज्वला का यह किरदार पसंद आ गया था और मैंने एक बार में ही इसे स्वीकार कर लिया था।

आप मृणाल की मां का किरदार निभा रही हैं, जो एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाली, हठी, और अधिकारपूर्ण योद्धा राजकुमारी हैं। शो में यह किरदार उज्ज्वला से कैसे जुड़ता है?

मृणाल की मां उज्ज्वला का किरदार इस कथानक में महत्वपूर्ण है। उसके माध्यम से, युवा मृणाल उन अच्छे आदर्शों और शिक्षा को सीखेगी और आत्मसात करेगी, जो जिंदगी भर उसके साथ रहेंगे। उज्ज्वला मृणाल को युद्ध की कार्यनीति बनाने और प्रशिक्षण, परिवार को साथ रखने का ज्ञान देगी और यह भी बताएगी कि कैसे अपनी जिंदगी को आगे बढ़ाया जाए और उज्जवला की मृत्यु के बाद भी मेहनत पूर्वक इन सीखों का अनुसरण करें, जो बड़ी सुंदरता के साथ मृणाल के किरदार को गढ़ेंगे। मृणाल अपने बचपन से ही अपने अंदर समाहित मूल आदर्शों के साथ एक योद्धा की विरासत को आगे बढ़ाएगी।

आप भारतीय टेलीविजन पर एक सुप्रसिद्ध कलाकार रही हैं, क्या कोई ऐसी भूमिका या प्रोजेक्ट है जिसे आप हमेशा से करना चाहती थीं? या आपका सबसे यादगार किरदार कौन सा रहा है?

मैं भारतीय टेलीविजन उद्योग में कुछ ही समय से रही हूं। एक एक्टर होने के नाते, मैं हमेशा ही ऐसी भूमिकाएं या किरदार चुनने की कोशिश करती हूं जिसमें मेरे लिए एक अनोखे तरीके से कुछ व्यक्त करने हेतु हो और जो मेरी परफॉर्मेंस को हाइलाइट करने के लिए मुझे आश्चर्यजनक आदर्श और सार दे। पृथ्वी वल्लभ के लिए जब मुझे मृणाल की मां का किरदार ऑफर किया गया तो मुझे यह किरदार निभाने को लेकर कोई समस्या या आशंका नहीं हुई। एक कलाकार के रूप में, मेरे लिए अपने फैंस और दर्शकों की उम्मीदों को बनाए रखना सबसे महत्वपूर्ण है। जब लोग मुझे मेरे किसी यादगार भूमिका के लिए अब भी याद करते हैं, तो मुझे बहुत गर्व महसूस होता है क्योंकि यह मुझे एक संतुष्टि और पहचान देता है।

चमकीले सेब के चमत्कारी गुण

- सेब का रस पीने से आंतों में जख्म होने की समस्या दूर होती है। आंतों की सूजन में सेब का रस लाभदायक है।
- एंटी-ऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर सेब का रस निकालकर उसमें मिश्री मिलाकर सुबह-सुबह सेवन करने से खांसी के रोग में लाभ मिलता है।
- गर्भावस्था में सेब का रस पीने से कब्ज की समस्या से निजात मिलती है। कैल्शियम से भरपूर सेब के रस से राख, चाक, मिट्टी, स्लेटी खाने से सुरक्षा मिलती है।
- गर्भावस्था में प्रतिदिन सेब और गाजर का 100-100 ग्राम रस मिलाकर पीना महिला और गर्भस्थ शिशु के लिए फायदेमंद है।
- भोजन से पहले सेब खाने से पाचन शक्ति मजबूत होती है और मस्तिष्क को अधिक शक्ति मिलती है।
- सेब के रस में मिश्री मिलाकर पीने से भूख ज्यादा लगती है।
- प्रतिदिन सेब खाने से जुकाम से अधिक पीड़ित रहने वाले रोगियों को लाभ होता है।
- स्त्रियों की शारीरिक सौंदर्य वृद्धि व स्तनों में दूध के विकास के लिए सेब का रस फायदेमंद है। सेब खाने से चेहरे की लालिमा विकसित होती है।
- रात के समय सेब खाने से कुछ दिनों में पेट के कीड़े खत्म हो जाते हैं।
- टाईफाइड में सेब खिलाने एवं इसका रस पिलाने से दुर्बलता कम होती है और पाचन क्रिया में सुधार होता है।
- मोटापे को दूर करने के लिए भी सेब का नियमित इस्तेमाल फायदेमंद होता है।
- सेब के सेवन से कैंसर की समस्या भी दूर होती है।
- सेब का मुरब्बा खाने और दूध पीने से अनिद्रा की समस्या दूर होती है।
- सेब को गर्म राख में भूनकर प्रतिदिन खाने से पाचन क्रिया की समस्या दूर होती है।
- सेब के रस में गाजर का रस मिलाकर पीने से गर्मी के मौसम में लू के प्रकोप से सुरक्षा मिलती है और अधिक प्यास नहीं लगती है।

ADVT.

PIONEER INTERNATIONAL SCHOOL

Pioneer Group

20+ YEARS OF DILIGENCE & EXCELLENCE IN EDUCATION

Pioneer Group was established in 1996. The group is a renowned name in providing quality from KG to PG. Pioneer Group is run and managed by highly qualified & experienced professionals having domain experience in the field of education & industry. Pioneer Group is determined to bring out the best in all students by acceding them to explore their full potential, resulting in a confident, committed and a successful individual. The Group runs with an objective to meet the widely felt need for globally oriented Citizens in the field of Education & Technology. During this span of existence, the Group has earned a reputation as one of the premier Institutes of India.

Modern Teaching Techniques

Pioneerian Way of Learning

The effective use of technology in teaching and learning has changed the face of education. In the world that we currently live in, technology is a very vital factor. Technology that is made use of in the classroom is very beneficial in helping the students understand and absorb what they are being taught. With ultra-modern technique and value based education system, we develop our ward for smart world with talking robots and advanced tab.

Robo
FUN FILLED LEARNING WITH ROBO

Tab. Play. Learn
SMART STUDY TABLETS WITH SMART STUDY APP

Sonkatch

Nursery to Class VIII

ADMISSION OPEN

Transport Facility

At Pioneer International School safety of each child is our utmost concern. The state of the art GPS system is installed in every vehicle which will alert parents as well as school authorities about the route. We track all buses in real-time so that parents can be notified about the actual arrival time of the buses.

Lunch Facility

Healthy eating can stabilize a child's energy, sharpen their mind. At Pioneer International School, the students will learn to eat complete and healthy food and to learn table manners and dining etiquettes. The dining room becomes the symbolic hub of the school, binding pupils and teachers together.

Hostel Facility

Residing in hostel provides students with the opportunity to experience living in a community dedicated to the academic and personal development of individual members. The School has hostel facility with full time warden amidst a heavy security and vigilance.

Smart Class Rooms

The classroom of Pioneer International School are at par with international standards. All classrooms are replete with modular furniture and extensive display boards to ensure that students give their best to the process of learning and achievement.

Lush Green Campus

A day at Pioneer International School is an entirely different experience altogether. The picturesque site and blossoming green environment makes the campus, free from pollution. The campus is spread over 15 acres of lush green land has more than 2,500 trees. The school is also easily reached by public transportation. We have well ventilated school structure with safe and hygienic indoors and outdoors.

PIONEER CAMPUS: Indore-Bhopal Highway, Sanwer, Sonkatch-455118 (M.P.)
Contact: +91-9755666128, +91-9893936045
CITY OFFICE: Rotary Bhawan, Somvariya, Sonkatch-455118 (M.P.)
www.pioneerinternationalschool.com | www.facebook.com/pioneersonkatch | pioneerinternationalsonkatch@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक प्रमोद कुमार जैन द्वारा सिद्धार्थ ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एबी रोड, इंदौर से मुद्रित एवं एफएच 39 स्कीम नं. 54 विजय नगर इंदौर से प्रकाशित।
संपादक: प्रमोद कुमार जैन, आरएनआई नं.: MPBIL-02279, फोन नं.: 0731-2570645